

# डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 9, प्यूरिटनवाद

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह प्यूरिटनवाद पर सत्र 9 है।

ठीक है। ठीक है। मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 12 पर हूँ। ओह, और हमें आज परीक्षा के बारे में बात करने की ज़रूरत नहीं है।

हम शुक्रवार को इस बारे में बात करेंगे और फिर पाठ को पढ़ेंगे। और मेरे पास परीक्षा होगी, इसलिए मैं परीक्षा को देख पाऊंगा और सुनिश्चित करूंगा कि आप जो पढ़ रहे हैं और बाकी सब चीजों के मामले में आप सही दिशा में हैं। इसलिए, हम आज व्याख्यान देंगे, फिर शुक्रवार को लाइनें, सोमवार को परीक्षा, और फिर अगले सप्ताह हम बुधवार और शुक्रवार को व्याख्यान देंगे।

हम अगले सप्ताह शुक्रवार को चर्चा समूह नहीं करेंगे। ठीक है, तो यह पाठ्यक्रम का पृष्ठ 12 है। यह व्याख्यान संख्या चार है, मुक्त चर्च में प्यूरिटनवाद का धर्मशास्त्र और नई दुनिया में प्यूरिटनवाद का विस्तार, जो इस बारे में है कि हम कहाँ हैं।

तो, सबसे पहले, प्यूरिटनवाद से पहले इंग्लैंड का धार्मिक इतिहास। ठीक है। अब, एक बात, एक बात जो हमने कहने की कोशिश की थी, वह यह थी कि, एक तरह से याद दिलाने के लिए, कि भौगोलिक रूप से हम, हम इस समय के संदर्भ में थोड़ा बदल गए हैं क्योंकि हमने जो सुधार देखा है वह लूथर के तहत जर्मनी और कैल्विन के तहत स्विट्जरलैंड था, लेकिन अब यह इंग्लैंड की ओर बढ़ रहा है।

और इंग्लैंड में सुधार हो रहा है, और फिर, इसका कुछ हिस्सा, राज्यों या बल्कि अमेरिका में आने वाला है, इसलिए हमने कहा कि प्यूरिटनवाद का नई दुनिया में विस्तार हो रहा है। तो हमने इसके बारे में बात की। फिर, नंबर बी, बैपटिस्टों के बीच कांग्रेसनलिज्म का विकास।

तो, सबसे पहले हमने कांग्रेसनलिज्म के बारे में बात की। हमने प्यूरिटन्स के धर्मशास्त्र का उल्लेख किया। ओह, मैंने नहीं किया, मुझे यह यहाँ नहीं मिला।

मुझे बस इतना ही करना है। हमने प्यूरिटन्स के धर्मशास्त्र का उल्लेख किया है, और हमारे उद्देश्यों के लिए, धर्मशास्त्रीय चर्चा, एक अर्थ में, विश्वास और आश्वासन द्वारा औचित्य से हटकर, लेकिन अब यह चर्च विज्ञान के पूरे व्यवसाय में थोड़ा बदल गई है। इसलिए, प्यूरिटन्स चर्च के मामलों के बारे में बहुत चिंतित थे, और दो प्रमुख चिंताओं को चर्च की पूजा पद्धति में विभाजित किया जा सकता है।

उन्हें लगा कि एंग्लिकन चर्च अभी भी बहुत कैथोलिक है, पर्याप्त रूप से सुधारवादी नहीं है, और चर्च की राजनीति या चर्च को चलाने के तरीके के बारे में भी। उन्हें किसी तरह की पदानुक्रमित सरकार द्वारा चर्च चलाने का यह व्यवसाय पसंद नहीं था। वे चर्च को मण्डली द्वारा चलाना पसंद करते हैं, लोगों को चर्च चलाने में अपनी बात कहने का अधिकार देते हैं, इत्यादि।

इसलिए, निस्संदेह, पूजा-पाठ और राजनीति उनके लिए दो तरह की प्रेरक शक्तियाँ बन गईं। तो, फिर, इंग्लिश इंडिपेंडेंट मूवमेंट, हमने एक पृष्ठभूमि दी, हमने अमेरिका आने वाले तीर्थयात्रियों के बारे में बात की, फिर सी, हमने अमेरिका में प्यूरिटन आप्रवासन और अमेरिकी कांग्रेसनलिज़्म के आकार के बारे में बात की। अब, मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि हमने उस पर चर्चा की, अमेरिकी कांग्रेसनलिज़्म के आकार को आकार देना।

ठीक है, हमने अभी तक वह पूरा नहीं किया है, नंबर सी। ठीक है, हमने बताया कि सचमुच हज़ारों प्यूरिटन थे जो इन तटों पर आए थे। और शायद मैंने उस दिन पर्याप्त ज़ोर नहीं दिया; वास्तव में, ये प्यूरिटन कहाँ से आए थे? वे ठीक उसी जगह आए जहाँ हम हैं। वे यहीं आए। वे बोस्टन और जिसे हम उत्तरी तट कहते हैं, इप्सविच जैसी जगहों और ऐसी ही जगहों पर आए।

तो, यहाँ ऊपर प्यूरिटन देश है। यहाँ मुख्य रूप से प्यूरिटन लोग बसे थे, यहाँ समुद्र तट के किनारे। तो, हम यहाँ वास्तव में इसके बीच में हैं।

तो, याद रखें कि जब वे आए थे, तो वे प्लायमाउथ में उस कॉलोनी से विशेष रूप से खुश नहीं थे। याद है हमने इसका उल्लेख किया था? क्योंकि प्लायमाउथ कॉलोनी अलगाववादी थे, वे स्वतंत्र थे, वे लोग थे जिन्होंने चर्च छोड़ दिया था। दूसरी ओर, प्यूरिटन, चर्च को भीतर से सुधारना चाहते थे, चर्च को शुद्ध करना चाहते थे, इसलिए उनका नाम यही है।

मुझे लगता है कि हमने जो नहीं किया वह अमेरिकी कांग्रेसनलिज़्म को आकार देना है। इसलिए, हम अब अमेरिकी कांग्रेसनलिज़्म को आकार देने का उल्लेख करना चाहते हैं। और बस एक शब्द है कि मैंने यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं किया।

तो, हाँ, यहाँ एक शब्द है जिसका मैं यहाँ उल्लेख करना चाहता हूँ। और यह है कैम्ब्रिज प्लेटफ़ॉर्म। ठीक है, कैम्ब्रिज प्लेटफ़ॉर्म।

कैम्ब्रिज प्लेटफ़ॉर्म 1648 में हुआ था। इसलिए, हमें कैम्ब्रिज प्लेटफ़ॉर्म, 1648 पर ध्यान देना चाहिए। और वह क्या है? खैर, वास्तव में, प्लायमाउथ में जो तीर्थयात्री थे, वे मूल रूप से कांग्रेसनलिस्ट थे, है न? उन्होंने सोचा कि आपको ऐसा करना चाहिए; वे स्वतंत्र अलगाववादी हैं, लेकिन उन्होंने सोचा कि आपको चर्च कैसे चलाना चाहिए? आपको चर्च को किसी तरह के पदानुक्रम से नहीं चलाना चाहिए।

आपको चर्च को मण्डली द्वारा चलाना चाहिए, ठीक है? और जैसा कि हमने बताया, बोस्टन में प्यूरिटन अलगाववादियों को पसंद नहीं करते थे, लेकिन बोस्टन और अन्य स्थानों जैसे कि यहाँ जिसे हम उत्तरी तट कहते हैं, में प्यूरिटन भी सरकार के रूप के संदर्भ में मण्डलीवादी थे। लेकिन

1648 तक जो हुआ वह यह था कि इस देश में प्यूरिटन अब एंग्लिकन चर्च में नहीं थे ताकि वे एंग्लिकन चर्च को शुद्ध कर सकें। वे इंग्लैंड के मदर चर्चों से काफी दूर हैं।

तो, जो हो रहा है वह यह है कि वे वास्तव में अपने चर्चों का निर्माण कर रहे हैं और मण्डली की राजनीति के बाद अपनी मण्डली बना रहे हैं। इसलिए, इस अर्थ में, प्यूरिटन अब एंग्लिकन चर्चों में नहीं जा रहे हैं। वे एंग्लिकन नहीं हैं जैसे वे इंग्लैंड में थे, एंग्लिकन चर्च में रहकर एंग्लिकन चर्च को सुधारने की कोशिश करते थे।

वे पूरी तरह से कांग्रेसनलिस्ट हैं। इसलिए वास्तव में, यहाँ के प्यूरिटन और प्लायमाउथ के अलगाववादी, जो कुछ भी करने का फैसला करते हैं, वह बहुत स्वाभाविक बात है, वे एक साथ आने का फैसला करते हैं। आइए हम सब एक साथ जुड़ें।

तो, 1648 में, कैम्ब्रिज मंच प्यूरिटन और स्वतंत्र लोगों को एक साथ लाकर कांग्रेसनलिज्म नामक एक संप्रदाय का निर्माण था। तो यह 1648 में इस देश में आकार लेता है। इसलिए अब वे एक दूसरे के साथ दुश्मनी नहीं रखते।

वे एक तरह से इस अद्भुत समझौते में एक साथ आए। इसे अमेरिकी कांग्रेसनलिज्म के चार्टर के रूप में जाना जाता है। इसलिए, 1648 में, इन तटों पर कांग्रेसनलिज्म की स्थापना की गई।

अब, याद रखें कि हमने कहा था कि प्रचलित सिद्धांतों में से एक जिसके बारे में ये लोग बात करने की कोशिश कर रहे थे वह था चर्च विज्ञान। तो, इस तरह से उन्होंने चर्च विज्ञान के सिद्धांत के संदर्भ में निर्णय लिया है, इस तरह से उन्होंने मण्डली के माध्यम से अपने चर्चों को आकार देने का फैसला किया है और इसी तरह से। इस तरह से, मण्डलीवाद का जन्म हुआ।

अब, मुझे आपकी पृष्ठभूमि के बारे में नहीं पता। इसलिए शायद आखिरी दिन हम इस बारे में थोड़ी बात कर सकें। लेकिन आपमें से कुछ लोग शायद कांग्रेसनलिस्ट हों।

शायद यह आपकी तरह का संप्रदायिक जुड़ाव है। और अगर ऐसा है, तो यह तकनीकी रूप से 1648 और इस चार्टर से जुड़ा है जिसे स्थापित किया गया था। तो यह अमेरिका में प्यूरिटन आप्रवासन और अमेरिकी कांग्रेसनलिज्म को आकार देने वाला है।

क्या इस बारे में कोई सवाल है? क्या हम इसे समझते हैं, आप जानते हैं, हम यहाँ इस तरह के स्वतंत्र आंदोलनों को आकार लेते हुए देख रहे हैं। यह वह समय है जब यह सब हो रहा है, और चर्च-विज्ञान यहाँ प्रमुख धार्मिक मुद्दा बन गया है। ठीक है? ठीक है।

चलिए बैपटिस्ट के पास चलते हैं। आप में से कुछ बैपटिस्ट हो सकते हैं, और यह आपकी पृष्ठभूमि हो सकती है। और इसलिए चलिए बैपटिस्ट के पास चलते हैं और एक परिचय देते हैं, और फिर पृष्ठ 13 पर रूपरेखा जारी होती है।

लेकिन चलिए बैपटिस्ट का परिचय देते हैं। और मुझे यहाँ थोड़ा पीछे जाना है अगर आप मुझे यहाँ वापस जाने की अनुमति दें। इंग्लैंड में दो लोग रहते थे, दो नेता।

जॉन स्मिथ नाम का एक आदमी, और मुझे लगता है कि हमारे पास उसकी डेट्स हैं। ठीक है। और वह थॉमस हेल्विस नाम के एक आदमी का दोस्त था।

इस नाम का उच्चारण हेल्विस है, लेकिन स्मिथ और हेल्विस ... ठीक है। अब वे सहयोगी हैं।

ये दोनों लोग सहयोगी हैं। और वे स्वतंत्र हैं। वे एंग्लिकन चर्च के भीतर नहीं हैं।

उन्होंने फैसला किया है कि हम एंग्लिकन चर्च छोड़ देंगे। और उन्होंने एंग्लिकन चर्च को लगभग 1608 में छोड़ दिया था। इसलिए, ये लोग स्वतंत्र हैं।

लेकिन वे यह भी तय करते हैं कि एक और तरह का चर्च संबंधी मुद्दा है जिस पर वे निर्णय लेते हैं। वे तय करते हैं कि ये सभी शिशु बपतिस्मा जो ये सभी लोग कर रहे हैं, कैथोलिक शिशुओं को बपतिस्मा देते हैं, एंग्लिकन शिशुओं को बपतिस्मा देते हैं, अन्य स्वतंत्र लोग शिशुओं को बपतिस्मा देते हैं, अन्य अलगाववादी शिशुओं को बपतिस्मा देते हैं। हमें नहीं लगता कि यह सही है।

हमें लगता है कि बाइबल वयस्कों को बपतिस्मा लेने की शिक्षा देती है। इसलिए, वे शरण पाते हैं। बेशक, इंग्लैंड में उनका स्वागत नहीं किया जाता क्योंकि वे इस पर विश्वास करते हैं।

तो, वे शरण कहाँ पाते हैं? वे शरण के लिए कहाँ जाएँगे? हमने दूसरे दिन इसका जिक्र किया था। वे किस देश में या कहाँ जाएँगे? वे नीदरलैंड जाएँगे। याद रखें, हमने कहा था कि नीदरलैंड दयालु धार्मिक सहिष्णुता का स्थान है।

अब, वे एम्स्टर्डम जाते हैं। और यह कुछ ऐसा है जिसकी मैं आज सलाह नहीं दूंगा। लेकिन जॉन स्मिथ वयस्क बपतिस्मा के बारे में इतना आश्वस्त था कि उसने एम्स्टर्डम में नहरों में से एक में खुद को बपतिस्मा दिया।

अब, शायद नहरें आज की तुलना में तब बहुत ज़्यादा साफ़ थीं, कम से कम मैंने जो देखा है, उसके हिसाब से। और शायद 1608 में वे आज की तुलना में ज़्यादा अच्छी थीं। यही उन्होंने करने का फैसला किया।

वह एक बात कहना चाहता था। और वह बात थी पूर्ण विसर्जन द्वारा वयस्क बपतिस्मा, यही मैं करने जा रहा हूँ। और इसलिए, स्मिथ और हेल्विस वास्तव में उन लोगों के पूरे व्यवसाय का परिचय हैं जो खुद को बैपटिस्ट कहते हैं।

अब, यह हमें अगले पृष्ठ, पृष्ठ 13 पर ले जाता है। और हम देखेंगे कि सामान्य आर्मिनियन बैपटिस्ट, कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट संघों का गठन और रैंकों के भीतर विभाजन। तो सबसे पहले बी के तहत, बैपटिस्टों का पहला समूह, निश्चित रूप से स्मिथ और हेल्विस, वे थे जिन्हें जनरल बैपटिस्ट या आर्मिनियन बैपटिस्ट कहा जाता था।

उन्हें जनरल बैपटिस्ट या आर्मिनियन बैपटिस्ट इसलिए कहा जाता था क्योंकि वे स्वतंत्र इच्छा पर जोर देते थे। ईश्वर लोगों को अपनी कृपा प्रदान करता है, और लोग अपनी स्वतंत्र इच्छा से ईश्वर को हां या ना कह सकते हैं। ईश्वर को हां या ना कहने की इच्छा की इस स्वतंत्रता पर जोर देने के कारण वे प्रसिद्ध हो गए, और जैकब आर्मिनियस की शिक्षाओं के बाद उन्हें जनरल या आर्मिनियन बैपटिस्ट की उपाधि मिली।

तो, वे बन गए, यह वास्तव में बैपटिस्ट आंदोलन की शुरुआत थी। और स्मिथ और हेल्विस, अंततः, लंबी कहानी संक्षेप में, लेकिन स्मिथ की मृत्यु 1612 में हुई। और इसलिए हेल्विस ने एक छोटी सी मंडली को वापस लंदन ले जाने का फैसला किया।

और इसलिए यहीं पर उन्होंने लंदन में पहली बैपटिस्ट मण्डली बनाई। स्मिथ की मृत्यु हो गई थी। आप देख सकते हैं कि 1612 में, हेल्विस चार साल तक जीवित रहे।

लेकिन 1612 में, वह वापस लंदन चले गए और एक छोटा सा संप्रदाय बनाया, और उन्होंने खुद को जनरल बैपटिस्ट या आर्मिनियन बैपटिस्ट कहा। तो यही सब शुरू हुआ। यही सब शुरू हुआ।

लेकिन देखिए, आपकी रूपरेखा में नंबर सी, लगभग 1638 में, बैपटिस्टों का एक समूह था जिसने फैसला किया, नहीं, हम नहीं हैं; हम स्वतंत्र इच्छा में विश्वास नहीं करते हैं जिस तरह से स्मिथ और हेल्विस ने इसके बारे में बात की है। हम आर्मिनियन बैपटिस्ट या जनरल बैपटिस्ट नहीं हैं। हम कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट हैं।

तो, कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट ने 1638 में लंदन में एक मण्डली शुरू की। तो, वे, ये कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट, इच्छा की स्वतंत्रता पर जोर नहीं दे रहे हैं, बल्कि उन चीजों पर जोर दे रहे हैं जिनके बारे में हमने जॉन कैल्विन के साथ बात की थी, खासकर दोहरे चुनाव पर। तो, 1638 से शुरू होकर, आपको वहाँ बैपटिस्टों का एक और समूह मिल गया है जिसे कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट कहा जाता है या इसे कभी-कभी पर्टिकुलर बैपटिस्ट कहा जाता है, लेकिन मेरे पास वह नहीं है, मेरे पास वह नाम नहीं है।

लेकिन कभी-कभी, इन लोगों को पर्टिकुलर बैपटिस्ट कहा जाता है। तो, ठीक है। अब, नंबर डी, एसोसिएशन का गठन।

इन बैपटिस्टों के लिए, खास तौर पर लंदन के लोगों के लिए, यहाँ संघों का गठन वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो गया; यहीं से यह सब शुरू हुआ। तो, ठीक है। अब, मुझे नहीं पता कि आप में से कोई बैपटिस्ट है या नहीं।

शायद आप सभी बैपटिस्ट हैं। मुझे नहीं पता। लेकिन बैपटिस्ट के लिए, बैपटिस्ट के लिए अधिकार का केंद्र कहाँ है? क्या यह किसी संप्रदाय, आधिकारिक संप्रदाय के नेतृत्व में है? क्या बैपटिस्ट के लिए अधिकार का केंद्र यहीं है? या यह कहीं और है? यह कहाँ है? यदि आप में से कोई बैपटिस्ट है, तो वह क्या है? शास्त्र निश्चित रूप से अधिकार का आधार है।

और फिर, जैसी, धर्मग्रंथ की व्याख्या कौन करता है? संप्रदाय के नेता बाइबल की व्याख्या कैसे करते हैं? कौन हमें बताता है कि आम तौर पर बैपटिस्ट परंपरा में इसका क्या मतलब है? कोई भी? वह क्या है? वह क्या है? पादरी, पादरी, और स्थानीय चर्च, मण्डली, और स्थानीय चर्च। बैपटिस्ट परंपरा के लिए अधिकार का केंद्र स्थानीय चर्च में है। अब, हमारे पास सभी प्रकार के बैपटिस्ट संप्रदाय हैं, इसलिए हम यहाँ सामान्य रूप से बात कर रहे हैं।

लेकिन स्थानीय चर्च अधिकार का केंद्र है। और कौन नियुक्त करता है? बैपटिस्ट परंपरा में, एक अर्थ में, नियुक्त करने का अधिकार किसके पास है? क्या यह संप्रदाय है या स्थानीय चर्च है? यह स्थानीय चर्च है। तकनीकी रूप से, नियुक्त करने का अधिकार, नियुक्त करने का अधिकार, स्थानीय चर्च में निहित है।

तो, यह बैपटिस्ट परंपरा का हिस्सा है। अब, मुझे पता है कि हमारे पास इससे निकलने वाले बहुत से अलग-अलग तरह के विचार हैं, लेकिन मैं आम तौर पर बैपटिस्ट परंपरा के बारे में बात कर रहा हूँ कि अधिकार स्थानीय चर्च में है। बैपटिस्ट इस बात पर बहुत गर्व करते हैं कि हम, स्थानीय चर्च, अधिकार, और इसी तरह।

इन लोगों को इस बात पर बहुत गर्व था। लेकिन उन्होंने पाया कि उन्हें संगठन बनाना था या नहीं, उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन उन्होंने संगठन बनाने का फैसला किया। ठीक है? और क्यों, और उन्होंने ऐसा क्यों किया, अगर मेरे पास होता, तो मैं बस इसे चित्रित करता।

इसलिए, उन्होंने फैसला किया, आपके पास यहाँ एक स्थानीय चर्च है, और यहाँ एक स्थानीय चर्च है, और यहाँ एक स्थानीय चर्च है। आपके पास इंग्लैंड के विभिन्न हिस्सों में फैले स्थानीय चर्च हैं। आप जो करना चाहते हैं वह यह है कि आप एक संघ बनाना चाहते हैं, न कि उन स्थानीय चर्चों को यह बताना कि उन्हें क्या करना है।

यह एसोसिएशन का काम नहीं है। हालाँकि, एसोसिएशन का काम यह देखना है कि हमारे बीच क्या समानता है। क्या हम समझ सकते हैं कि प्रत्येक स्थानीय चर्च और अगले स्थानीय चर्च में क्या समानता है? और अगर हम यह समझ सकें कि हमारे बीच क्या समानता है, तो इससे हमें ताकत मिलेगी।

जैसे-जैसे बैपटिस्ट बढ़े और विकसित हुए, इन लोगों ने, जनरल बैपटिस्ट और कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट दोनों ने, चीजों के बारे में बैपटिस्ट दृष्टिकोण देने के लिए संघों का गठन किया। इसलिए मैं यहाँ क्या करना चाहूँगा, क्योंकि याद रखें, यहाँ हमारा मुख्य विषय चर्चविज्ञान है, मैं जो करना चाहूँगा वह बस उन कुछ चीजों का उल्लेख करना है जिन पर उन्होंने चर्चा की, कुछ मुद्दे जो उनके लिए महत्वपूर्ण थे क्योंकि वे इन संघों में एक साथ आए थे। इसका मतलब स्थानीय चर्च के अधिकार को बिल्कुल भी कम करना नहीं है, लेकिन वे इन संघों में एक साथ आते हैं, और वे कहते हैं, क्या हम चीजों के बारे में जनरल बैपटिस्ट दृष्टिकोण दे सकते हैं? तो मैं उनमें से कुछ का उल्लेख करूँगा।

नंबर एक वह है जिसे वे चर्चों का जमावड़ा कहते हैं। चर्चों का जमावड़ा। चर्चों के जमावड़े से उनका मतलब था कि आप अपने जन्म के आधार पर किसी चर्च से संबंधित नहीं हैं।

आप जानते हैं, अगर आप एंग्लिकन चर्च में पैदा हुए हैं, तो आप एंग्लिकन चर्च में बपतिस्मा लेंगे, यह आपका चर्च होगा। नहीं, आप इसके सदस्य हैं। चर्च का विचार यह है कि यह एक एकत्रित समुदाय है। यह वे लोग हैं जो स्वेच्छा से और इच्छापूर्वक मसीह के शरीर में आते हैं।

यह बैपटिस्ट दृष्टिकोण है। इसलिए, आप किसी चर्च से सिर्फ इसलिए संबंधित नहीं हैं क्योंकि आप उसमें पैदा हुए हैं या सिर्फ इसलिए कि आपके माता-पिता या आपके दादा-दादी उस चर्च में थे। आप अपने धर्म परिवर्तन के आधार पर चर्च से संबंधित हैं और चर्च में शामिल होने के इच्छुक हैं।

तो यह एक बात थी। दूसरी बात जिस पर उन्होंने बात की, वह थी विश्वासियों का बपतिस्मा। वे शिशु बपतिस्मा में विश्वास नहीं करते थे जैसा कि एंग्लिकन या कैथोलिक करते थे।

वे वयस्कों के बपतिस्मा में विश्वास करते थे। केवल विश्वासियों को ही बपतिस्मा दिया जाता है। यदि आप बैपटिस्ट परंपरा से आते हैं, तो इनमें से कुछ बातें आपको जानी-पहचानी लगेंगी, लेकिन विश्वासियों का बपतिस्मा।

तो, तीसरी बात जिस पर उन्होंने बहुत चर्चा की, वह यह थी कि हमें अपरिवर्तित लोगों से कैसे संबंध रखना चाहिए? इनमें से कई बैपटिस्ट समुदाय बड़ी संस्कृति, बड़ी दुनिया से बहुत अलग-थलग समुदाय थे, क्योंकि वे बड़ी संस्कृति, बड़ी दुनिया को विश्वासियों को दूषित करने वाला मानते थे, इत्यादि। इसलिए कई बैपटिस्टों के बीच इस तरह का अलगाववादी विचार था कि हम उस व्यापक बपतिस्मा रहित बुरी दुनिया का हिस्सा नहीं बनना चाहते। हम उस दुनिया का हिस्सा नहीं बनना चाहते।

हम अपने ही तरह के विश्वासियों का समूह बनना चाहते हैं। तो यह तीसरी बात है जिसके बारे में उन्होंने बात की। चौथी बात जिसके बारे में उन्होंने बात की वह थी समन्वय।

और हम पहले ही बता चुके हैं कि समन्वय का अधिकार स्थानीय चर्च के पास है। और फिर से, एसोसिएशन उस अधिकार को छीनने की कोशिश नहीं कर रहा है। वे बस यह देखने की कोशिश कर रहे हैं कि हमारे बीच क्या समानता है। समन्वय के बारे में हम क्या मानते हैं? समन्वय के बारे में हमारा बैपटिस्ट दृष्टिकोण किस तरह का है? इसलिए वे समन्वय के बारे में बहुत बात करते हैं।

उन्होंने सरकार के साथ संबंधों के बारे में भी बहुत बात की। आपको सरकार के साथ कैसे संबंध रखना चाहिए? और आम तौर पर, यह बैपटिस्टों के साथ सच था जो यहाँ आए और नई दुनिया में आए; आम तौर पर, वे चर्च और राज्य के बीच एक तरह का अलगाव चाहते थे। लेकिन वे चर्च और राज्य के बीच एक तरह का अलगाव चाहते थे, जो आज एक तरह से बदल गया है। वे चर्च और राज्य के बीच अलगाव चाहते थे क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि राज्य हम बैपटिस्टों को परेशान करे क्योंकि हम वयस्कों को बपतिस्मा देते हैं या ऐसा कुछ करते हैं।

वे चर्च और राज्य को अलग करना चाहते थे ताकि राज्य इस समुदाय के जीवन में किसी तरह का हस्तक्षेप न करे। इसलिए वे जिम्मेदारियों का स्पष्ट रूप से निर्धारण चाहते थे। इसलिए वे एक तरह से राज्य के हस्तक्षेप, अपने धार्मिक जीवन में सरकारी हस्तक्षेप से डरते थे।

और यह बात अमेरिका में भी सच साबित होने जा रही है। बैपटिस्ट अमेरिका में चर्च और राज्य के पृथक्करण के बहुत मजबूत समर्थक होंगे। मुझे लगता है कि यह बहुत दिलचस्प है।

इसका किसी भी चीज़ से कोई लेना-देना नहीं है, इसलिए किसी भी तरह का संबंध जोड़ने की कोशिश न करें। लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत दिलचस्प है कि जब हम आज अपनी चर्चाओं में चर्च और राज्य के पृथक्करण के बारे में बात करते हैं, तो लोग चर्च और राज्य के पृथक्करण के बारे में इसलिए बात कर रहे हैं क्योंकि उन्हें डर है कि चर्च का राज्य पर क्या प्रभाव पड़ने वाला है। इसलिए, वे राज्य पर धार्मिक प्रभाव नहीं चाहते हैं।

वे शायद एक धर्मनिरपेक्ष राज्य चाहते हैं, इसलिए वे चर्च और राज्य को अलग करना चाहते हैं। यह मेरे लिए वास्तव में दिलचस्प है क्योंकि चर्च और राज्य के अलगाव की चर्चा का मूल कारण यह नहीं है। मूल कारण यह बैपटिस्ट कारण था।

हम नहीं चाहते थे कि राज्य चर्च को नियंत्रित करे। हमने आज इसे पलट दिया है और घोड़े के आगे गाड़ी लगा दी है। यह एक अजीब बात है।

ठीक है, बस कुछ और बातें। उन्होंने मिशनरी कार्य के बारे में बात की, बेशक। ये लोग बहुत मिशनरी विचारधारा वाले थे, इसलिए उन्होंने मिशनरी कार्य के बारे में बात की जिसमें ये सभी स्थानीय चर्च लगे हुए थे या करने का प्रयास कर रहे थे।

उन्होंने चर्च की पूजा के बारे में भी बात की। उन्होंने चर्च की पूजा पद्धति के बारे में बहुत बात की। बेशक, यह एंग्लिकन पूजा पद्धति और एंग्लिकन पूजा पद्धति से कहीं ज़्यादा सरल थी।

हालाँकि, कभी-कभी इसमें पैर धोने जैसी चीज़ें भी शामिल होती थीं, जो एक तरह से लगभग एक तरह का संस्कार था। उन्होंने इसे संस्कार नहीं कहा, बल्कि पैर धोना कहा क्योंकि वे यीशु को इसका एक उदाहरण मानते थे और इसी तरह की अन्य बातें। उन्होंने अनुशासन के बारे में भी बात की।

आप चर्च के सदस्यों को कैसे अनुशासित करते हैं? प्रत्येक स्थानीय चर्च का अपना तरीका होता है, लेकिन आइए इस बारे में बात करें और देखें कि क्या हमारे पास चर्च के लोगों के अनुशासन के बारे में बैपटिस्ट दृष्टिकोण है। उन्होंने इस बारे में बहुत बात की। उन्होंने एक अच्छे बैपटिस्ट, एक अच्छे आस्तिक और एक अच्छे ईसाई के रूप में घरेलू जीवन के बारे में भी बात की।

पति-पत्नी के बीच क्या रिश्ता है? आपको अपने बच्चों की परवरिश कैसे करनी चाहिए? इस तरह की बातें। ये लोग इस बात में बहुत रुचि रखते थे कि बैपटिस्ट का दृष्टिकोण क्या है? बैपटिस्ट क्या है? बैपटिस्ट को अपने जीवन और उस दुनिया के जीवन की किस तरह से कल्पना करनी चाहिए

जिसमें हम रहते हैं? इसका मतलब यह नहीं था कि एसोसिएशन हर स्थानीय चर्च पर इसे थोपने जा रही थी। हर स्थानीय चर्च स्वतंत्र है।

हर स्थानीय चर्च स्वायत्त है। स्थानीय चर्च को अपने फैसले लेने का अधिकार था, लेकिन एक दृष्टिकोण था जिसे वे बैपटिस्ट दृष्टिकोण की तरह मानते थे। इसी कारण से संघों का गठन किया गया।

यहाँ अंतिम बात है रैंकों में विभाजन। रैंकों में विभाजन। सबसे पहले, जनरल बैपटिस्ट या अर्मेनियाई बैपटिस्ट।

जनरल बैपटिस्ट और अर्मेनियाई बैपटिस्ट का क्या हुआ? खैर, वास्तव में, उनके साथ जो हुआ वह यह था कि बैपटिस्ट, जनरल बैपटिस्ट और अर्मेनियाई बैपटिस्ट थे जिन्होंने मसीह की दिव्यता पर सवाल उठाना शुरू कर दिया। उन्होंने सवाल करना शुरू कर दिया कि क्या मसीह वास्तव में दिव्य थे या क्या वे सिर्फ एक अच्छे व्यक्ति थे जिनका अनुसरण किया जाना चाहिए। इस समय इंग्लैंड में बहुत से जनरल बैपटिस्ट यूनिटेरियन बन गए।

वे अब त्रिदेवों में विश्वास नहीं करते थे। वे केवल एक ईश्वर में विश्वास करते थे, और उनका मानना था कि यीशु एक अच्छे इंसान और एक अच्छे आदर्श थे, हमारे लिए अनुसरण करने के लिए एक अच्छा उदाहरण, इसलिए वे यूनिटेरियन बन गए। इसलिए, लगभग सौ साल बाद, मूल रूप से, ये जनरल बैपटिस्ट एक साथ मिल गए, जिसे अंततः यूनिटेरियनवाद के रूप में जाना गया।

एकतावाद एक आंदोलन के रूप में इंग्लैंड में शुरू हुआ, और फिर यह यहाँ अमेरिका में आया। इसलिए, वे उदारवादी मार्ग पर चलते हैं, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं। ठीक है, रैंकों में विभाजन के बारे में क्या? कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट के बारे में क्या? इन विशेष बैपटिस्ट के बारे में क्या? खैर, इंग्लैंड में और यहाँ तक कि अमेरिका में भी कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट ने उस उदारवाद पर प्रतिक्रिया व्यक्त की जो उन्होंने जनरल बैपटिस्ट में देखा था।

इसलिए, उन्होंने चरम दक्षिणपंथी रुख अपनाते हुए प्रतिक्रिया व्यक्त की, और कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट अल्ट्रा-बैपटिस्ट बन गए। वे हाइपर-कैल्विनिस्ट बन गए। वे कैल्विन, कैल्विनिस्ट बैपटिस्ट और हाइपर-कैल्विनवाद हैं।

तो, आपके पास एक चरम वामपंथी, एकतावादी प्रकार का विंग है, और आपके पास एक चरम दक्षिणपंथी विंग है। आपके पास यहाँ चीजों के दक्षिणपंथी विंग पर हाइपर-कैल्विनिस्ट हैं, और कुछ बीच में ही रहे। लेकिन आपके पास दो चरमपंथी बन रहे हैं।

अति-कैल्विनवादी इतने अति-उत्साही थे कि एक बार जब वे अपने संघों में मिशनरी कार्य पर चर्चा कर रहे थे, तो उन्होंने फैसला किया कि हमें मिशनरियों की आवश्यकता नहीं है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। क्योंकि परमेश्वर ने दुनिया की शुरुआत से पहले ही तय कर दिया था कि कौन बचाया जाएगा, दुनिया की शुरुआत से पहले ही तय कर दिया था कि कौन खो जाएगा, हमें लोगों को यह बताने के लिए मिशनरियों की आवश्यकता नहीं है। यदि परमेश्वर उन्हें बचाने जा रहा है, तो परमेश्वर उन्हें बचाएगा।

अगर वे खो गए हैं, तो वे खो गए हैं, बस। तो यह हाइपर-कैल्विनिस्ट की तरह है। तो यही वह जगह है जहाँ बैपटिस्ट गए।

यहीं से उनका विकास हुआ। अब, अगर आप में से कुछ लोगों की पृष्ठभूमि बैपटिस्ट की है, तो आज बहुत सारे बैपटिस्ट संप्रदाय हैं। मेरे अमेरिकी ईसाई धर्म पाठ्यक्रम में, मेरे पास एक स्लाइड है जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न बैपटिस्ट संप्रदायों को दिखाती है।

तो, आज दुनिया में संभवतः 99 बैपटिस्ट संप्रदाय हैं। उनमें से कुछ बहुत ही दिलचस्प नाम हैं और इसी तरह की अन्य बातें। मुझे नहीं पता कि मैं उन्हें ढूँढ पाऊँगा या नहीं।

शायद मुझे यहाँ भी यही दिखाना चाहिए। लेकिन बैपटिस्ट के साथ यही हुआ। लेकिन ध्यान दें कि बैपटिस्ट एक स्वतंत्र आंदोलन है।

वे एक अलगाववादी आंदोलन हैं। वे अब एंग्लिकन नहीं हैं। वे वहाँ से चले गए हैं।

तो, हमारे पास जो है, क्योंकि चर्च-विज्ञान चर्चा का केंद्रीय बिंदु है, अब हमारे पास जो है वह यह है कि दो स्वतंत्र समूह बन रहे हैं, कांग्रेसनलिस्ट और बैपटिस्ट, दोनों इंग्लैंड में और यहाँ नई दुनिया में। तो अब हम इस सब पर कुछ प्रतिक्रिया देखने जा रहे हैं, लेकिन कौन कांग्रेसनलिस्ट या बैपटिस्ट के बारे में बात करना चाहता है? कोई भी? यहाँ कुछ भी? क्या आप इन स्वतंत्र अलगाववादी समूहों को अपने स्वयं के संप्रदायिक ढाँचे में विकसित होते हुए देखते हैं? वहाँ थे। 17वीं शताब्दी में इंग्लैंड में और 18वीं शताब्दी की शुरुआत में, दो चरमपंथी बहुत मजबूत हो गए।

यूनिटेरियनवाद और हाइपर-कैल्विनवाद भी ताकत थे। लेकिन मध्यम समूह हैं, और मध्यम समूह अधिक से अधिक बनते जा रहे हैं, जैसा कि मैं कहता हूँ, आज, शायद सौ या उससे ज़्यादा बैपटिस्ट होंगे, तकनीकी रूप से, बैपटिस्ट संप्रदाय। तो हाँ, मध्यम समूह थे, और अंततः, उनमें से बहुत सारे थे।

लेकिन ये एक तरह से दो विंग हैं। कुछ और, कांग्रेसनलिस्ट, बैपटिस्ट। आप देख सकते हैं कि इन अलगाववादियों के साथ क्या हो रहा है, इन स्वतंत्र लोगों के साथ चर्च के संदर्भ में, ठीक है, एंग्लिकन चर्च की प्रतिक्रिया के रूप में।

ठीक है, मैं पेज 13 पर हूँ। अब मैं प्यूरिटन्स पर प्रतिक्रिया करना चाहता हूँ। तो, प्यूरिटन्स यहाँ अमेरिका में आते हैं।

हमारे यहाँ भी वे आए हैं, लेकिन हर कोई प्यूरिटन से खुश नहीं था। प्यूरिटन के प्रति कुछ खास प्रतिक्रियाएं थीं, और इन प्रतिक्रियाओं से और अधिक संप्रदाय और अधिक स्वतंत्रता आई, और प्रतिक्रियाओं से और अधिक अलगाववादी समूह सामने आए। हालाँकि, प्यूरिटन के प्रति तीन प्रमुख प्रतिक्रियाएं थीं।

मैंने वास्तव में अपने अमेरिकी ईसाई धर्म पाठ्यक्रम में इस पर व्याख्यान दिया था, लेकिन आप में से कोई भी उस पाठ्यक्रम में नहीं गया है, इसलिए हम ठीक हैं। ठीक है, मैं तीन प्रमुख लोगों के बारे में बात करता हूँ। मैंने उन्हें यहाँ सूचीबद्ध किया है।

प्यूरिटन्स के प्रति पहली बड़ी प्रतिक्रिया रोजर विलियम्स नामक एक व्यक्ति की थी। अब, रोजर विलियम्स का इतिहास दिलचस्प है। वह 17वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अमेरिकी धार्मिक इतिहास में 17वीं सदी के लोगों में से एक था।

रोजर विलियम्स एक ऐसा नाम है जिसे जानना ज़रूरी है। तो चलिए मैं रोजर विलियम्स के बारे में कुछ बातें बताता हूँ और बताता हूँ कि प्यूरिटन्स के प्रति उनकी प्रतिक्रिया के रूप में उन्हें इतना महत्वपूर्ण क्यों बनाया गया। रोजर विलियम्स का जन्म इंग्लैंड में एक एंग्लिकन परिवार में हुआ था।

इसलिए, उन्होंने इंग्लैंड के एंग्लिकन चर्च में अपनी तरह की तीर्थयात्रा शुरू की। तो यहीं से उन्होंने शुरुआत की। और फिर परिवार यहाँ बोस्टन चला गया।

और जब वह बोस्टन में रहता है, तो वह एक तरह से प्यूरिटन बन जाता है। वह एंग्लिकन चर्च के भीतर रहता है, लेकिन वह सोचता है कि क्या एंग्लिकन चर्च को भीतर से शुद्ध किया जा सकता है। इसलिए, वह इस तरह की प्यूरिटन परंपरा में चला जाता है।

हालाँकि, एक बार जब वह प्यूरिटन बन जाता है, तो उसे यकीन होने लगता है कि शायद एंग्लिकन चर्च को बचाया नहीं जा सकता। इसलिए, वह बोस्टन में रहते हुए इस तरह के विचार रखने लगता है। अब, बोस्टन एक बहुत ही प्यूरिटन जगह थी, और इसका धार्मिक जीवन और नागरिक जीवन दोनों पर वास्तव में नियंत्रण था।

लेकिन बोस्टन में रहते हुए उसके मन में अलगाववादी विचार, स्वतंत्र विचार आने लगे हैं। लेकिन ऐसा नहीं होने वाला है। इसलिए उसे यहाँ से निकल जाना चाहिए।

अगर वह अलगाववादी बनना चाहता है, अगर वह स्वतंत्र होना चाहता है, तो उसे बोस्टन छोड़ना होगा। और इसलिए वह बोस्टन छोड़ देता है, और वह सचमुच जंगल से होकर दक्षिण की ओर जाता है, और उसे एक जगह मिलती है जिसका नाम क्या है? वह उसका नाम कैसे रखता है? प्रोविडेंस। बाइबिल में एक अच्छा नाम है, प्रोविडेंस।

और उन्होंने प्रोविडेंस नामक एक जगह की स्थापना की। उन्होंने इसे कई सिद्धांतों के आधार पर पाया, लेकिन एक प्रमुख सिद्धांत ऐसा था जिसके बारे में उनका मानना था कि यह बाइबिल का सिद्धांत है। इसलिए उन्होंने उस सिद्धांत के आधार पर प्रोविडेंस की स्थापना की।

और वह सिद्धांत धार्मिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता का सिद्धांत है। उनका मानना है कि लोगों की एक कॉलोनी होनी चाहिए, एक ऐसी कॉलोनी जहाँ लोग आ सकें जो धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र हों, किसी भी धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र हों, धार्मिक न होने के लिए स्वतंत्र

हों। लेकिन वह पूरी तरह से धार्मिक स्वतंत्रता और धार्मिक स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं, और प्रोविडेंस वह जगह है जहाँ वह ऐसा करने जा रहे हैं, बेशक, यहाँ के प्यूरिटन के विपरीत, जिनके पास बोस्टन में लोगों के धार्मिक जीवन को पकड़ने के लिए बहुत अधिक बंधन हैं।

इसलिए, उन्होंने इसे धार्मिक स्वतंत्रता पर आधारित किया। अब, मैं यहाँ पर कुछ ऐसा कहना चाहूँगा जिस पर आप ध्यान देना चाहेंगे। ध्यान दें कि मैंने धार्मिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता शब्द का प्रयोग किया है।

मैंने धार्मिक सहिष्णुता शब्द का इस्तेमाल नहीं किया। धार्मिक सहिष्णुता, खैर, हम सहिष्णु हैं। हम वास्तव में इन लोगों से असहमत हो सकते हैं।

नहीं, धार्मिक स्वतंत्रता पूर्ण स्वतंत्रता है जहाँ तक रोजर विलियम्स का सवाल है। इसलिए, उन्होंने इस बस्ती की स्थापना की, और उन्होंने प्रोविडेंस कहा, और अंततः, निश्चित रूप से, इस जगह को रोड आइलैंड और प्रोविडेंस प्लांटेशन कहा गया, जिसका, वैसे, किसी भी चीज़ से कोई लेना-देना नहीं था, इसलिए कोशिश न करें। लेकिन 50 राज्यों में से किसी राज्य का सबसे लंबा नाम रोड आइलैंड है, क्योंकि तकनीकी रूप से राज्य का नाम रोड आइलैंड और प्रोविडेंस प्लांटेशन है, इसलिए क्योंकि यह सभी 50 राज्यों में सबसे लंबा राज्य का नाम है।

तो, यह तो आप समझ ही गए होंगे। यह एक बहुत कम ज्ञात तथ्य है। शायद आप आज सुबह नाश्ते के समय इस बारे में बात नहीं कर रहे थे, लेकिन यह सच है कि उन्होंने ईश्वर की कृपा पाई और इस चीज़ को स्थापित किया।

ठीक है, अब मैं सिर्फ यह बताना चाहता हूँ कि रोजर विलियम्स के साथ क्या हुआ क्योंकि यह प्यूरिटन्स के प्रति इस तरह की प्रतिक्रिया के लिए महत्वपूर्ण है। अगर वह अलगाववादी है, अगर वह एक स्वतंत्र व्यक्ति है, अगर वह पूरी तरह से धार्मिक स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता चाहता है, तो उसे लगता है कि उसे किसी समूह से जुड़ना होगा, और इसलिए वह वहाँ बैपटिस्ट से जुड़ता है। ये इंग्लिश बैपटिस्ट और वेल्श बैपटिस्ट हैं, और वास्तव में, 1639 में, उसने उन्हें अपना चर्च बनाने में मदद की, जो अब है; आप देख सकते हैं कि प्रोविडेंस में चर्च मूल चर्च नहीं है।

बेशक, यह एक औपनिवेशिक चर्च था, लेकिन उन्होंने अमेरिका में पहला बैपटिस्ट चर्च बनाने में उनकी मदद की क्योंकि उन्होंने बैपटिस्टों से जुड़ने का फैसला किया था। हालाँकि, आप बैपटिस्टों के लिए, आप उन्हें बहुत लंबे समय तक नहीं रख सकते क्योंकि वह केवल तीन या चार सप्ताह के लिए बैपटिस्ट हैं। रोजर विलियम्स एक चरम स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में समाप्त हो गए।

वह अंततः एक साधक के रूप में सामने आया जिसे हम साधक कहते हैं। अब, यह स्वतंत्र रूप से चीजों के मामले में अति है। साधक वह व्यक्ति होता है जो किसी भी संप्रदाय से संबंधित नहीं होता है, वह सही धर्म की तलाश कर रहा होता है, अपने मामले में, ईसाई धर्म के सही पहलू की तलाश कर रहा होता है, इत्यादि।

इसलिए, वह एक साधक के रूप में समाप्त होता है, और उसके जीवनी लेखक, पेरी मिलर ने कहा कि रोजर विलियम्स ने सोचना शुरू कर दिया, वह एक ऐसी जगह पर पहुँच गया जहाँ उसे

लगा कि शायद दुनिया में केवल दो ईसाई हैं, वह और उसकी पत्नी, और फिर उसे अपनी पत्नी पर शक होने लगा। इसलिए, यदि आप एक साधक हैं और आप केवल एक ईसाई तक ही सीमित रह जाते हैं, तो आप मुश्किल में हैं। लेकिन यहीं पर रोजर विलियम्स एक साधक के रूप में समाप्त हो गए।

तो, यह दिलचस्प है। एक एंग्लिकन, प्यूरिटन, सेपरेटिस्ट और बैपटिस्ट साधक के रूप में उनकी तीर्थयात्रा एक दिलचस्प कहानी है। यही रोजर विलियम्स की तीर्थयात्रा है।

लेकिन वह निश्चित रूप से प्यूरिटन्स के लिए एक कांटा है, इसमें कोई संदेह नहीं है, क्योंकि वह एक ऐसी कॉलोनी स्थापित करने जा रहा है जो बोस्टन में उसके द्वारा अनुभव किए गए अनुभव के विपरीत है, जो उसने महसूस किया था कि बोस्टन में प्यूरिटन्स द्वारा धार्मिक जीवन पर कट्टरता और सख्त नियंत्रण था। वह एक ऐसी जगह चाहता है जहाँ लोग आकर धार्मिक होने के लिए स्वतंत्र हों, धार्मिक न होने के लिए भी स्वतंत्र हों। तो यह प्यूरिटन्स के लिए पहली प्रतिक्रिया है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

ठीक है, तो रोजर विलियम्स। रोजर विलियम्स के बारे में कोई सवाल? बहुत, बहुत महत्वपूर्ण। हमारे अमेरिकी ईसाई धर्म पाठ्यक्रम में, हमें वास्तव में रोजर विलियम्स पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है क्योंकि वह बहुत महत्वपूर्ण है।

ठीक है, दूसरे नंबर पर क्लेकर्स हैं। प्यूरिटन के प्रति दूसरी प्रतिक्रिया क्लेकर्स है। ठीक है, क्लेकर्स की स्थापना यहीं हुई थी, यहाँ सूची में सबसे नीचे।

क्लेकर्स की स्थापना इंग्लैंड में जॉर्ज फॉक्स नामक व्यक्ति ने की थी। यह नाम सिर्फ जानने लायक है, क्योंकि यहाँ चर्च से जुड़ी सारी बातें यहीं तक सीमित हैं। लेकिन जॉर्ज फॉक्स, क्लेकर्स के संस्थापक हैं।

अब, जॉर्ज फॉक्स एक एंग्लिकन थे, बेशक, जॉर्ज फॉक्स के बारे में लंबी कहानी। वह एक एंग्लिकन थे, लेकिन उन्हें यह एहसास होने लगा कि भगवान उनके साथ बहुत ही व्यक्तिगत तरीके से काम कर रहे हैं, चर्च की संरचना से अलग, चर्च की पूजा पद्धति से अलग। और इसलिए उन्हें यह एहसास होने लगा कि भगवान काम करते हैं। मसीह का एक ऐसा आंतरिक प्रकाश उनके अंदर और उनके माध्यम से काम कर रहा है।

और जॉर्ज फॉक्स ने इस सुसमाचार का प्रचार करना शुरू किया, मसीह के आंतरिक प्रकाश का यह सुसमाचार। जॉर्ज फॉक्स ने अंततः एक स्वतंत्र आंदोलन की स्थापना की, और इस स्वतंत्र आंदोलन को क्लेकर्स कहा गया। और यही कारण था कि उन्हें क्लेकर्स कहा जाता था, और वैसे, अगर आप क्लेकर्स को एक संप्रदाय कहना चाहते हैं, तो संप्रदाय काफ़ी तेज़ी से बढ़ा।

जॉर्ज फॉक्स ने प्रचार करना शुरू किया और फिर कुछ साल बाद इंग्लैंड में 50,000 क्लेकर्स हो गए। अब, अगर आप क्लेकर्स का नाम जानना चाहते हैं, तो क्लेकर्स होने का कारण यह है कि आंदोलन की शुरुआत में, इन क्लेकर्सों के बीच बहुत ज़्यादा नाच-गाना होता था। और इसलिए

केकर शब्द इन लोगों के लिए उपहास का शब्द बन गया क्योंकि उनकी बैठकें, उनकी धार्मिक बैठकें, बहुत शोरगुल वाली होती थीं, जिसमें नाच-गाना और चिल्लाना और सब कुछ होता था।

अब, क्या आप भी आज जब केकर मीटिंग के बारे में सोचते हैं, तो आपको यह याद आता है या नहीं? जब आप केकर मीटिंग के बारे में सोचते हैं, तो आपको क्या याद आता है? क्या आप में से कोई संयोग से केकर मीटिंग में गया है? केकर मीटिंग हाउस? क्या आपको चावल के केक याद आते हैं? ओह, केकर। ओह, ओटमील। यह बात तुरंत मेरे दिमाग में नहीं आई, जेसी, लेकिन यह केकर ओट्स है, है न? केकर ओट्स।

क्या केकर ओट्स पेंसिल्वेनिया में बनते हैं? पेंसिल्वेनिया एक केकर राज्य बन गया क्योंकि इसकी स्थापना एक केकर, विलियम पेन ने की थी। लेकिन केकर ओट्स, केकर राज्य, केकर। क्या आपको कुछ और याद है? अगर आप किसी मीटिंग के बारे में सोचते हैं, तो अगर आप केकर मीटिंग में गए तो कैसा लगेगा? हाँ।

सही है। यह एक बहुत ही शांत बैठक होगी। महिलाएँ इसमें शामिल होंगी। यह आज के इवेंजेलिकल केकर्स के बीच सच नहीं है, लेकिन पारंपरिक केकर बैठकों में, महिलाएँ एक तरफ होती हैं, पुरुष दूसरी तरफ होते हैं, और बैठक मौन होती है।

और केवल, वहाँ कोई धार्मिक अनुष्ठान नहीं है। वे संस्कारों का अभ्यास नहीं करते, और वे उपदेश नहीं देते, और उनके पास नियुक्त पादरी नहीं होते और इसी तरह की अन्य चीजें। जैसे कोई आत्मा से प्रेरित होता है, बोलने के लिए खड़ा होता है, और इसी तरह की अन्य चीजें।

खैर, यह उन केकरों से काफी अलग है जब वे मूल रूप से स्थापित हुए थे। तो उन्होंने ऐसा किया, वे बस गए। उन्होंने ऐसा किया, और बस गए।

इसका कारण यह था कि ये बैठकें बहुत शोरगुल वाली होती थीं। बहुत सारे केकर थे जिन्हें लगा कि हम धार्मिक जीवन के मामले में वास्तव में रास्ते से भटक रहे हैं। और इसलिए, एक तरह से, इस पर विपरीत प्रतिक्रिया हुई।

तो, वे शांत हो गए, और बैठकें बहुत शांत और भावुक थीं और इसी तरह की अन्य बातें। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि केकर्स, उह, उह, प्यूरिटन्स की प्रतिक्रिया थे। ठीक है।

अब, लंबी कहानी को संक्षेप में कहें तो, उन्हें इन तटों पर लाने के लिए, क्योंकि हमारे पास अब केकर नामक एक अलगाववादी समूह है, यह स्वतंत्र समूह है। अब वे खुद को केकर कह रहे हैं। और वैसे, तो यह तीसरी तरह का संप्रदाय होगा जिसे हमने देखा है, है न? हमने कांग्रेसनलिस्ट को देखा है।

हमने बैपटिस्ट को देखा है। अब हम केकर्स को भी देखेंगे। ठीक है।

वे बोस्टन में आने की कोशिश करने के लिए इन तटों पर आए थे, और उन्हें बोस्टन में जाने की अनुमति नहीं थी। वास्तव में, यहाँ आने वाली पहली दो केकर महिलाओं को जहाज पर वापस इंग्लैंड भेज दिया गया था। उन्हें जहाज से उतरने की भी अनुमति नहीं थी।

फिर, केकर बोस्टन में आने लगे और वहाँ बसने लगे। तो, बोस्टन के नागरिक अधिकारियों ने बोस्टन में केकरों को कैसे संभाला? क्या आप जानते हैं? क्योंकि हम ऐसा नहीं कर सकते। हम इस स्वतंत्र आंदोलन को नहीं अपना सकते।

हम इस अलगाववादी आंदोलन को बर्दाश्त नहीं कर सकते। यह एक पाखंड है, और यह नागरिक अव्यवस्था का कारण बनेगा। खैर, उन्होंने उन्हें बोस्टन कॉमन पर फाँसी देना शुरू कर दिया।

इसलिए, जब आप बोस्टन कॉमन से गुज़रें, तो याद रखें कि बोस्टन कॉमन 18वीं और 19वीं सदी में फाँसी की जगह थी। वे वहाँ लोगों को फाँसी देते थे। इसलिए, वे बोस्टन कॉमन पर केकरों को फाँसी देते थे।

और केकर महिलाओं में से एक, संक्षेप में, यदि आप राज्य भवन की ओर मुंह करके खड़े हैं, यदि आप राज्य भवन की ओर सीधे देख रहे हैं, तो दाईं ओर एक महिला बैठी हुई है, मैरी ड्वायर। वह बोस्टन कॉमन पर फाँसी दिए जाने वालों में से एक थी। तो वहाँ उसकी प्रतिमा है।

तो इस तरह से प्यूरिटन्स ने इन केकरों जैसे स्वतंत्र समूह को दबाने की कोशिश की। अब, आखिरकार, वे यहाँ पर पकड़ बनाने में सफल हो गए, लेकिन जैसे ही उन्होंने यहाँ पकड़ बनाई, उनका स्वागत नहीं किया गया। उनका वास्तव में स्वागत नहीं किया गया।

अगर आप बोस्टन कॉमन पर लोगों को फाँसी देना शुरू करते हैं, तो आप उन्हें बता रहे हैं कि वे नहीं हैं। हम आपके साथ खुश नहीं हैं। यह एक अच्छा अभिवादन नहीं है, आप जानते हैं, बोस्टन में आपका स्वागत है। और वैसे, हम आपको फाँसी देने जा रहे हैं।

लेकिन तो, वे कहाँ गए? वे कहाँ जा रहे हैं? वे कहाँ जा रहे हैं? वे प्रोविडेंस जा रहे हैं। वे प्रोविडेंस जा रहे हैं। रोजर विलियम्स ने रोड आइलैंड में उनका स्वागत किया।

वैसे, उन्हें केकर पसंद नहीं थे; धार्मिक दृष्टि से, उन्हें उनका धर्मशास्त्र पसंद नहीं था, लेकिन उन्होंने रोड आइलैंड में उनका स्वागत किया क्योंकि यह धार्मिक स्वतंत्रता का स्थान है। वे बोस्टन से बड़ी संख्या में प्रोविडेंस और रोड आइलैंड आए क्योंकि उनका वहाँ स्वागत किया गया था। यह प्यूरिटन्स के प्रति दूसरी प्रतिक्रिया है।

ठीक है। प्यूरिटन्स के प्रति तीसरी प्रतिक्रिया एक बहुत ही महत्वपूर्ण महिला है, चर्च के इतिहास में एक महिला, और निश्चित रूप से हमारे मामले में, अमेरिकी चर्च के इतिहास में, और उसका नाम है ऐनी हचिंसन। ऐनी हचिंसन बोस्टन में रहने वाली एक प्यूरिटन थी, लेकिन ऐनी हचिंसन ने कुछ किया।

अब याद रखें, यह एक महिला है जो यह सब कर रही है। ऐनी हचिंसन ने कुछ ऐसा किया जो उसे कभी नहीं करना चाहिए था। वह अपने घर में धर्मशास्त्र पर चर्चा करने के लिए लोगों को अपने घर बुलाती है।

अब, और अपने गुरु, जॉन कॉटन के कुछ धर्मशास्त्र से वह सहमत थीं और कुछ से वह सहमत नहीं थीं, लेकिन उन्हें लगा कि अगर हम बाइबल को देखें और धर्मशास्त्र पर चर्चा करें, तो यह वास्तव में एक अद्भुत बात है। खैर, बोस्टन में प्यूरिटन नेतृत्व को यह दो कारणों से पसंद नहीं आया। नंबर एक, वह थी। नंबर एक, उन्हें उसका धर्मशास्त्र पसंद नहीं आया।

उन्हें लगा कि वह एक तरह के एंटीनोमियन धर्मशास्त्र और इसी तरह की अन्य बातों पर चर्चा कर रही थी। वे उसके धर्मशास्त्र से खुश नहीं थे, लेकिन दूसरी बात, वह सभी तरह के सामाजिक मानदंडों को तोड़ रही थी क्योंकि आपके पास एक महिला धर्मशास्त्र पढ़ा रही थी, और आप ऐसा नहीं कर सकते। यह महिला नियुक्त नहीं है।

वह नहीं है, और वह इस तरह से सेवा करने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए, ऐनी हचिंसन एक वास्तविक, हम क्या कहें, अमेरिका में प्यूरिटन्स के लिए प्रतिक्रिया थी। इसमें कोई संदेह नहीं है।

धर्मशास्त्र पढ़ाने वाली एक महिला के रूप में, वह एक वास्तविक प्रतिक्रिया थी। ठीक है, तो ऐनी हचिंसन है। अब, बेचारी ऐनी कहाँ है? वह कहाँ जा रही है? वह कहाँ जा रही है? ऐनी हचिंसन कहाँ है? उसके इतने सारे बच्चे थे।

उसके पति की मृत्यु हो गई है। वह कहाँ जा रही है? जेसी प्रोविडेंस। वह प्रोविडेंस जा रही है।

रोड आइलैंड ऐनी हचिंसन का स्वागत करने जा रहा है और धार्मिक स्वतंत्रता के कारण उसे अपने यहां ले जाएगा। और वे इस महिला को अनुमति देने जा रहे हैं, जैसा कि केकर महिलाएं, वैसे, रोड आइलैंड में पहले से ही बोल रही थीं। वे इस महिला को बोलने, धर्मशास्त्र पढ़ाने और इसी तरह के अन्य विषयों पर बोलने की अनुमति देने जा रहे हैं।

अब, अगर आप स्टेट हाउस में हैं, तो आप स्टेट हाउस को देख रहे हैं, आप एक तरफ मैरी ड्वायर को देख सकते हैं। दूसरी तरफ, यह स्टेट हाउस में मूर्ति है। आप देखिए, यह ऐनी हचिंसन की मूर्ति है।

तो, वह एक वास्तविक धार्मिक स्वतंत्रता व्यक्ति है। यही कारण है कि राज्य सदन में ये दोनों महिलाएँ राज्य सदन के दोनों ओर हैं: धार्मिक स्वतंत्रता और धार्मिक स्वतंत्रता की उनकी भावनाओं के कारण। ठीक है, तो ऐनी हचिंसन के बारे में कुछ भी।

संक्षेप में, ऐनी हचिंसन अंततः न्यूयॉर्क के ऊपरी राज्य में चली गईं। मुझे यकीन नहीं है कि उन्होंने प्रोविडेंस क्यों छोड़ा, लेकिन वे ऊपरी राज्य न्यूयॉर्क में चली गईं। और वहाँ रहने वाले उपनिवेशवादियों और वहाँ रहने वाले मूल अमेरिकियों के बीच वास्तव में थोड़ा बहुत युद्ध हुआ, और एक हमले में उनकी मृत्यु हो गई।

और उसके परिवार के कुछ लोग एक हमले में मारे गए, और इसी तरह वह ऊपरी राज्य न्यूयॉर्क में मर गई। यह ऐनी हचिंसन के लिए एक दुखद अंत है। लेकिन किसी भी मामले में, वे तीन प्रतिक्रियाएँ, रोजर विलियम्स, केकर्स, और ऐनी हचिंसन, वास्तव में प्यूरिटन चर्च विज्ञान और प्यूरिटन धर्मशास्त्र पर भी सवाल उठा रहे हैं।

तो यह वाकई बहुत महत्वपूर्ण था। ठीक है, तो इस बारे में सवाल? क्या मैंने आपको पाँच सेकंड का ब्रेक दिया है? मैंने नहीं दिया। भगवान आपका भला करे।

पाँच सेकंड। आज आप पाँच सेकंड के हकदार हैं। तो बस आराम करो, बस आराम करो।

और हो सकता है कि जब आप ऐसा कर रहे हों, तो आप बस आराम करें। यह कुछ ऐसा है जो मैं बोर्ड पर लिखने जा रहा हूँ अगर मुझे मिल जाए... मैं इसे यहाँ लिख दूँगा। ठीक है, मैं इसे बस एक मिनट में इस्तेमाल करूँगा।

धर्म और वाणिज्य। कोई सवाल? आराम करते हुए, आराम करते हुए। ठीक है, तो आपने मुझे अपने सवाल बता दिए हैं।

हम शुक्रवार को लायन्स डेन में मिलते हैं, और फिर सोमवार को हम एक परीक्षा देते हैं। मैं यहाँ थोड़ा जल्दी पहुँचने की कोशिश करूँगा और परीक्षा दूँगा। ठीक है, अब मैं अमेरिका में प्यूरिटनवाद के पतन के बारे में बात करना चाहूँगा, प्यूरिटनवाद के इस पतन के साथ क्या हुआ, और क्या प्यूरिटनवाद के इस पतन से कोई सबक सीखा जा सकता है। ठीक है।

ठीक है। प्यूरिटन्स का पतन क्यों हुआ? अब, चलिए कल्पना करते हैं, चलिए आपको 19वीं सदी के सलेम में ले चलते हैं। और वे आपको कुछ खास गलियों में ले जाते हैं और कहते हैं, अच्छा, यह सिर्फ सलेम ही नहीं होना चाहिए।

यह शायद इप्सविच या हैमिल्टन जैसी जगहें हो सकती हैं। मैं सलेम में ऐसी कुछ जगहों से परिचित हूँ। लेकिन अगर आप 19वीं सदी में सलेम जाएँ, तो आपको वहाँ की सड़कों पर चलना होगा।

वे आपको 19वीं सदी के खूबसूरत घर दिखाने जा रहे हैं, 19वीं सदी के बहुत ही शानदार घर। और कभी-कभी वे इनकी ओर इशारा करते हुए कहते हैं, ये प्यूरिटन के घर थे। खैर, असल में, वे मूल प्यूरिटन के घर नहीं थे।

और तो फिर यहाँ क्या हो रहा है? प्यूरिटनवाद के पतन का पहला कारण क्या है? आरंभिक प्यूरिटन, जब पैसा कमाते थे, तो वे अपना पैसा चर्चों में वापस डालते थे, अपने परिवारों में नहीं। वे अपना पैसा चर्चों या नागरिक समाज में वापस डालते थे। लेकिन वे अपना पैसा खुद में वापस नहीं डालते थे।

तो, मूल प्यूरिटन ने बहुत सारा पैसा कमाया। वैसे, उन मूल प्यूरिटन ने बहुत सारा पैसा क्यों कमाया? वे इतने अमीर क्यों थे? वे इतने अमीर कैसे बन गए? आप क्या सोचेंगे? ओह, उनमें से

कुछ के पास गुलाम भी रहे होंगे, लेकिन मैं किसी तरह की व्यक्तिगत आदतों के बारे में सोच रहा था, शायद व्यक्तिगत आदतें। क्योंकि प्यूरिटन क्या करते थे? वे कैसे सोचते थे कि आपको व्यक्तिगत जीवन जीना चाहिए? बहुत मितव्ययी, बहुत सख्त, बहुत मितव्ययी, बहुत सावधान।

इसी तरह से वे अपना निजी जीवन जीते थे। उनका मानना था कि यह बाइबिल में लिखा है। और इसलिए, क्योंकि वे इतने मितव्ययी, सावधान, सख्त जीवन जी रहे थे, और वे अपने व्यवसाय का निर्माण कर रहे थे, वे इन व्यवसायों में बहुत पैसा कमा रहे थे।

और इसलिए वे इस पैसे को वापस व्यापार में लगा रहे थे, और यह बढ़ता गया और बढ़ता गया और बढ़ता गया, या फिर नागरिक सरकार में वापस चला गया। हालाँकि, जो हुआ वह यह था कि दूसरी पीढ़ी, तीसरी पीढ़ी और चौथी पीढ़ी ने उस पैसे को लेना शुरू कर दिया और उसका इस्तेमाल अपने लिए किया। इसलिए, प्यूरिटनवाद के पतन का पहला कारण धन में वृद्धि थी।

तो 19वीं सदी के वे घर जो आप देखते हैं, वे बहुत ही विस्तृत, वे बहुत ही सुंदर घर जो आप सलेम में देखते हैं, मूल प्यूरिटन कभी भी ऐसे घर नहीं बनाते। वे कभी भी अपने पैसे खुद पर नहीं लगाते। उन्होंने अपना पैसा अपने व्यवसायों में लगाया।

तो, प्यूरिटन लोगों की संपत्ति में यह वृद्धि प्यूरिटनवाद के पतन का एक कारण थी। तो अब, प्यूरिटनवाद के पतन का दूसरा कारण धार्मिक उत्साह का कम होना था। पहली पीढ़ी या दूसरी पीढ़ी धार्मिक रूप से बहुत उत्साही थी।

उन्होंने एक पहाड़ी पर एक शहर बनाया जहाँ दुनिया के सभी लोग देख सकते थे कि हम रह रहे थे; यह बोस्टन में एक धर्मतंत्र नहीं था, लेकिन हम ईश्वर के नियमों के अनुसार रह रहे थे। और आप जानते हैं, यह कुछ ऐसा है। यह जिनेवा की तरह है, लोगों के लिए एक आदर्श शहर है जिसे देखकर वे देख सकते हैं कि ईसाई कैसे एक समुदाय बनाते हैं और इसी तरह की अन्य बातें। लेकिन दूसरी, तीसरी और चौथी पीढ़ी ने उस सुसमाचारी उत्साह को खो दिया।

वे अब उस तरह के इंजीलवादी उत्साह में रुचि नहीं रखते थे। इसलिए ईश्वर द्वारा शासित समाज का प्यूरिटन आदर्श, आप जानते हैं, ईश्वर द्वारा देखरेख किया जाता है, जो प्यूरिटन के बीच खत्म हो गया। इसलिए, मैंने जो किया है, मैं बस, आप जानते हैं, मुझे इसके लिए एक पावरपॉइंट बनाना चाहिए।

ऐसा लगता है कि इसे सेट करना बहुत आसान होगा, लेकिन शायद मुझे इसके लिए एक पावरपॉइंट भी बनाना चाहिए। ठीक है, मैंने अपना होमवर्क कर लिया है। लेकिन इसका मतलब यह था कि आप यहाँ एक तरह से चक्कर लगा रहे हैं क्योंकि मैं आपको यह नहीं बता सकता कि पहले कौन आया।

मेरा मतलब है, यह कह पाना अच्छा होगा। पहले क्या हुआ? क्या उन्होंने अपना धार्मिक उत्साह खो दिया या नहीं? पहले क्या हुआ? क्या वे वास्तव में धनवान बन गए? और धनवान बनने और पैसे को अपने ऊपर वापस लगाने से, क्या इससे उनका धार्मिक उत्साह खत्म हो गया? या क्या उनका धार्मिक उत्साह खत्म हो गया और इसलिए, क्योंकि वे धर्म को अपने जीवन का केंद्र नहीं

मान रहे थे, तो वे वाणिज्य और धन में बहुत रुचि लेने लगे? और इसलिए, क्या यह इसी तरह हुआ? खैर, मैं यही कहूंगा कि यह एक या दूसरा नहीं है; यह दोनों है।

इसलिए एक को दूसरे से पहले देखने के बजाय, आपको इसे एक चक्र, एक चक्र के रूप में देखना होगा। इस चक्र के चारों ओर घूमना ही उस समय प्यूरिटनवाद के पतन का कारण बना। इसलिए, यह प्यूरिटनवाद के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया।

यह दूसरी पीढ़ी से ज़्यादा समय तक खुद को बनाए रखने में सक्षम नहीं था। जब तक आप चौथी पीढ़ी, प्यूरिटन की पाँचवीं पीढ़ी तक पहुँचते हैं, तब तक वे अपने माता-पिता या अपने दादा-दादी या अपने परदादा-परदादी की तरह नहीं जी रहे होते या विश्वास नहीं कर रहे होते। तो अब इसका एक उदाहरण है, ओह, माफ़ करें।

इसका एक उदाहरण 1657 और 1662 के बीच घटी घटना है। प्यूरिटन, जो लोग प्यूरिटन थे, ने एक ऐसी चीज़ विकसित की जिसे हाफवे कॉवनेंट कहा जाता है, और उन्होंने उन वर्षों के दौरान उस कॉवनेंट को विकसित किया। अब, हाफवे कॉवनेंट का मतलब था कि पुराने दिनों में, आप केवल तभी चर्च से जुड़ सकते थे जब आप धर्म परिवर्तन की अभिव्यक्ति देते थे।

अगर आपने कहा, मैं मसीह का बच्चा हूँ, मेरा मानना है कि मैं धर्मांतरित हो गया हूँ, मैं चर्च में शामिल होना चाहता हूँ। या अगर, इस संदर्भ में, क्योंकि ये लोग शिशुओं को बपतिस्मा दे रहे थे, या मैं चाहता हूँ कि मेरे शिशु का बपतिस्मा चर्च में हो क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरे शिशु का पालन-पोषण विश्वासियों के समुदाय में हो और इसी तरह। ठीक है, ये पुराने दिन हैं।

अब, उन्होंने अंततः प्यूरिटन्स के बीच आधे रास्ते की वाचा विकसित की; आधे रास्ते की वाचा में कहा गया कि यदि आप एक अच्छे, नैतिक, नैतिक व्यक्ति हैं तो आप चर्च से संबंधित हो सकते हैं। आपको किसी धर्म परिवर्तन के अनुभव की गवाही देने की आवश्यकता नहीं है। आपको यह गवाही देने की आवश्यकता नहीं है कि आप मसीह के बच्चे हैं।

आप चर्च से जुड़ सकते हैं; अगर आप अच्छे इंसान हैं, तो चर्च आपको स्वीकार कर लेगा। आधे रास्ते का अनुबंध इसकी अनुमति देगा। या अगर आप आस्तिक नहीं हैं और आप चाहते हैं कि आपके बच्चे का बपतिस्मा हो, आपके शिशु का बपतिस्मा चर्च में हो, तो यह ठीक है।

तो आधे रास्ते के अनुबंध के साथ जो हुआ वह यह है कि चर्च ने मूल रूप से उन लोगों के लिए दरवाज़े खोले जो अन्यथा पिछली पीढ़ियों में चर्च से संबंधित नहीं हो सकते थे। आधे रास्ते के अनुबंध ने इस बात का प्रदर्शन किया कि प्यूरिटन ने चर्च के बारे में अपनी मूल समझ खो दी थी। उन्होंने उन्हें खो दिया था, आप जानते हैं, आपको इस आधे रास्ते के अनुबंध में कोई भी दोहरा चुनाव वाला व्यक्ति नहीं मिलता है।

वे अपना धर्मशास्त्र खो चुके थे, एक तरह से अपना रास्ता खो चुके थे। इनमें से कई प्यूरिटन तब बन गए, वे अब इंग्लैंड के चर्च से जुड़े नहीं थे। उनमें से कई, बेशक, कांग्रेगेशनलिस्ट बन गए, और अंततः, उनमें से कुछ यूनिटेरियन बन गए, यहाँ तक कि जहाँ उन्होंने त्रिदेवों को नकार दिया।

तो वे उस रास्ते पर चले गए, लेकिन यह प्यूरिटनवाद का पतन है। ठीक है। ठीक है।

तो अब, प्यूरिटनवाद के पतन के बारे में क्या? क्या आप में से कोई मैक्स वेबर की पुस्तक, प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म, का उपयोग अपने किसी भी पाठ्यक्रम के लिए करता है? क्या कोई भी व्यक्ति किसी भी पाठ्यक्रम के लिए उस पुस्तक का उपयोग करता है? ठीक है। यह एक बहुत ही रोचक पुस्तक है। और आप जानते हैं, प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म, मितव्ययिता, बचत, चेतना, सचेत कार्य, व्यवसाय की प्रोटेस्टेंट नैतिकता पश्चिमी दुनिया में पूंजीवाद के लिए आधारभूत है।

यह एक बहुत ही रोचक पुस्तक है, अगर आपको इसे अपनी गर्मियों की पठन सूची में शामिल करने का मौका मिले। आपका दिन शुभ हो, और हम शुक्रवार को लायन्स डेन में आपसे मिलेंगे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह प्यूरिटनवाद पर सत्र 9 है।